

न्यायालय राजस्व अपील प्राधिकारी, अलवर (राज०)

पीठासीन अधिकारी :- कमल राम मीना, आर.ए.एस.

अपील सं० :- 47/2016

(225 आर.टी.एक्ट)

उनवान

1. कौशल्या पत्नि स्व० छीतर,
2. नत्थी पुत्र स्व० छीतर,
3. अंगूरी पुत्री स्व० छीतर जातियान कुम्हार निवासीयान ग्राम लीली तहसील मालाखेड़ा जिला अलवर राज० ।
4. लल्लू पुत्र छाज्या जातियान कुम्हार निवासीयान ग्राम लीली तहसील मालाखेड़ा जिला अलवर राज० ।
5. यशोदा पुत्री हरबाई पत्नि शिवदयाल जाति कुम्हार निवासी काला कुआ, तहसील व जिला अलवर राज० ।
6. मु० चमेली पुत्री हरबाई पत्नि देवीसहाय जाति कुम्हार निवासी ग्राम बड़ोली तहसील लक्ष्मणगढ़ जिला अलवर राज० वारिसान मालिक काबिज जायदाद मृतक श्रीमती हरबाई बेवां श्री लहरी ग्राम लीली तहसील मालाखेड़ा जिला अलवर राज० ।
7. रामकिशोर पुत्र श्री लहरी,
8. भगवान पुत्र श्री लहरी जातियान कुम्हार निवासीयान ग्राम लीली तहसील मालाखेड़ा जिला अलवर राज० ।

..... अपीलांटान/वादीगण

बनाम

1. बीरबल पुत्र श्री लक्ष्मण,
2. हरभेजी बेवा श्री लक्ष्मण,
3. इन्दर पुत्र श्री लक्ष्मण,
4. तुल्ला पुत्र श्री लक्ष्मण,
5. केसन्ता पुत्री श्री लक्ष्मण जातियान कुम्हार निवासीयान ग्राम लीली तहसील मालाखेड़ा जिला अलवर राज० ।
6. भौरा पुत्र श्री धन्ना जाति कुम्हार – मृतक
6/1. रमेश पुत्र स्व० भौरा,
6/2. सुरेश पुत्र स्व० भौरा,
6/3. धन्नी बेवा भौरा – मृतक
6/4. सुतेन पुत्र स्व० जगदीश पौत्र भौरा,

- 6/5. विजय पुत्र स्व० जगदीश पौत्र भौरा जातियान कुम्हार निवासीयान ग्राम लीली तहसील मालाखेड़ा जिला अलवर राज० ।
- 6/6. पप्पी पुत्री स्व० जगदीश पौत्री भौरा पत्नि मूर्ति जातियान कुम्हार निवासी ग्राम बड़ोदामेव तहसील लक्ष्मणगढ़ जिला अलवर राज० ।
7. सुशील पत्नि स्व० सेदू – तर्क
8. धन्नी बेवा किशनलाल जाति कुम्हार निवासी ग्राम लीली तहसील मालाखेड़ा जिला अलवर राज० वारिसान काबिज जायदाद सेदू पुत्र किशनलाल निवासी ग्राम लीली तहसील मालाखेड़ा जिला अलवर – फौत
9. रामलाल पुत्र धन्ना जाति कुम्हार निवासी ग्राम लीली तहसील मालाखेड़ा जिला अलवर राज० ।
10. कमला पत्नि स्व० नेतराम,
11. मंगल पुत्र स्व० नेतराम,
12. ईसर पुत्र स्व० नेतराम जातियान कुम्हार निवासीयान ग्राम लीली तहसील मालाखेड़ा जिला अलवर राज० ।
13. मीरा पुत्री स्व० श्री नेतराम जाति कुम्हार निवासी ग्राम मंगलसिंह खेड़ा,
14. मानू पुत्र किशनलाल,
15. बत्तो पत्नि स्व० सरवण,
16. दिनेश पुत्र स्व० सरवण,
17. रोहिताश पुत्र स्व० सरवण,
18. चन्दा पुत्री स्व० सरवण जातियान कुम्हार निवासीयान ग्राम लीली तहसील मालाखेड़ा जिला अलवर राज० ।

..... रेस्पोंडेन्टान/प्रतिवादीगण

उपस्थित :-

1. श्री जगदीश चन्द सतीजा अभिभाषक अपीलांट ।
2. श्री मनोज जैन अभिभाषक रेस्पों सं० 1 ल० 5

::: निर्णय :::

दिनांक :-20.07.2018

यह अपील विद्वान सहायक कलक्टर, अलवर के निर्णय दिनांक 10.06.2016 के विरुद्ध इस न्यायालय में प्रस्तुत की गई है ।

संक्षेप में तथ्य इस प्रकार है कि वादीगण/अपीलांट ने एक प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा 212 आर.टी.एक्ट तहत अधीनस्थ न्यायालय में इस आशय का प्रस्तुत किया कि ग्राम लीली में स्थित विवादित आंराजी ख० नं० 1216, 1217, 1218, 1219 कुल कित्ता 4 कुल रकबा 1.13 है० में वादी नम्बर 1 व 2 का 4/9, वादी सं० 3, 4, 5 का 2/9 हिस्से को प्रतिवादीगण द्वारा दि० 3.9.2000 को दी गई धमकी के कारण विभाजन के विचाराधीन वाद के निर्णय तक प्रतिवादीगण को अस्थाई निषेधाज्ञा से पाबन्द करने का निवेदन किया । विद्वान तहत न्यायालय ने दावा दर्ज रजिस्टर कर प्रकरण कैम्प कोर्ट ग्राम पंचायत लीली में

Handwritten signature/initials

दि० 10.06.2016 को वादीगण का प्रार्थना पत्र आंशिक रूप से स्वीकार करते हुए उभयपक्ष को वाद के निर्णय तक रेकार्ड व मौके की यथास्थिति बनाये रखने हेतु पाबन्द कर दिया जिस निर्णय दि० 10.06.2016 से व्यथित होकर अपीलांट ने यह अपील इस न्यायालय में प्रस्तुत की है ।

अपील प्रस्तुत होने पर दर्ज रजिस्टर की गई । रेस्पो० को जरिये सम्मन तलब किया गया । तहत न्यायालय की पत्रावली तलब कर विद्वान अभिभाषकगण की बहस सुनी गयी ।

विद्वान अभिभाषक अपीलांट ने अपनी बहस में कथन किया कि तहत न्यायालय में वादी बीरबल ने एक वाद अन्तर्गत धारा 88, 89, 188 व 53 आर.टी.एक्ट का पेश किया जिसमें सजरा बताया गया है । दावे के अनुसार जमाबन्दी सम्वत् 2054 में खाता सं० 109 ख० नं० 1214, 1215 है । इस तरह खाता सं. 108 में 4 किता रकबा 1.13 है० रकबा है । इसकी दूसरी अपील खाता सं० 244 के किता 8 रकबा 1.56 है० विवादित है । खाता सं० 203 के किता 25 रकबा 3.78 है० विवादित है । छीतर बनाम हरभेजी मेरा दावा अन्तर्गत धारा 53, 188 आर.टी.एक्ट का था इसमें ख० नं० 1216, 1217, 1218 व 1219 हैं । खाता सं० 108 का अवलोकन कराया । मेरे दावे में मैंने प्रतिवादी को मदाखलत व मजाहमत नहीं करने तथा दस्तावेज पंजीबद्ध नहीं करने बाबत पाबन्द किये जाने की प्रार्थना की थी परन्तु यहां मुझे ही पाबन्द कर दिया कि मैं राजस्व रेकार्ड की यथास्थिति बनाये रखूं । यह आराजी पैतृक आराजी नहीं है तो अपीलांट को क्यों पाबन्द किया गया । अपीलांट के वाद में 212 में अन्य वाद के निर्णय का हवाला देकर क्यों पाबन्द किया है । अन्य वाद व अपीलांट के वाद को कन्सोलिडेट नहीं किया तो दूसरे वाद के निर्णय को इसमें लागू क्यों किया । बीरबल के वाद को साबित करना होगा कि यह रेकार्ड गलत क्यों है ? मेरा 2/5 हिस्सा क्यों दर्ज है । रेकार्ड व साक्ष्य नहीं है । दूसरे वाद के आधार पर मुझे पाबन्द नहीं किया जा सकता है । मुझे कृषि ऋण लेने का अधिकार है । ऋण के रेकार्ड का रिनीवल नहीं हो रहा है । ऋण लेने से मुझे क्यों पाबन्द किया जा रहा है । सह काश्तकार को आराजी रहन का अधिकार है । अपीलांट आराजी का बेचान नहीं कर रहा है परन्तु ऋण लेने का अधिकार है तो उससे मुझे क्यों वंचित किया जा रहा है । रेस्पो० ने 1/3 हिस्से से अधिक होने का कोई दस्तावेज प्रस्तुत नहीं किया है । साबिक रेकार्ड मेरा है तथा खातेदारी का ही है । इस प्रकरण से रेस्पो० का कोई लेना देना नहीं है । पहले की अपील का कहना है कि जिसमें यह खाता भी शामिल किया है । न्यायालय का जो मत है वह दावे में नहीं है । खाता सं० 108 में छाया 1/2 व सुखजी 1/2 के खातेदार थे । सुखजी लावलद फौत हो जाता है तो उसकी विरासत हमारे नाम दर्ज होती है । इन्तकाल सं० 191 से सुखजी का 1/2 हिस्सा छाज्या, लिछमन, धन्ना को मिली । इस प्रकार छाज्या का 2/3 हिस्सा बाकी 1/3 हिस्सा लिछमन, धन्ना पि० अर्जुन रेस्पो० को मिली । इस प्रकार खाता सं० 108 की जमीन कहा से आयी ये मैंने बताया है । सम्वत् 2020 से पहले सुखजी और छाज्या के 1/2-1/2 नाम दर्ज है । ये हमारी एक्सक्लूजीव आराजी रही है । दूसरे खाता में भी यही स्थिति है । रेस्पो० का यह कहना है कि ये चन्दू की खातेदारी की आराजी है और चन्दू के 2 लड़के हैं । प्रतिवादी को यह साबित करना है कि चन्दू की जमीन थी । रेस्पो. यह बताये कि चन्दू की विरासत का इन्तकाल गलत रूप से छाज्या ने दर्ज करा लिया जबकि ऐसा कोई इन्तकाल नहीं है । इस रेकार्ड से ही वादी/रेस्पो० अपने वाद को साबित करेंगे । मौके पर हम काबिज हैं ।

जमाबन्दी सम्बत् 2010 में ख० नं० 575 रकबा 5.14 बीघा छाज्या वल्द अर्जुन गैर मौरूसी साल 8 दर्ज है । वर्तमान रेकार्ड हमारे नाम है तथा कब्जा हमारा है । तहत न्यायालय ने अपीलांट को गलत पाबन्द किया है । अपीलांट विवादित आराजी का बेचान नहीं करेगें तथा आराजी रहन के लिए आदेश में संशोधन किया जावें । खातेदार को पाबन्द नहीं किया जा सकता है । इस संबंध में उन्होंने अपने कथन की ताईद में आर.आर.डी. 1997 पेज 30 पेश की और अपील अपीलांट स्वीकार करने का निवेदन किया ।

जवाब बहस में अभिभाषक रेस्पो० ने कहा कि चन्दू की विरासत चली आ रही है जिसके दो लड़के सुखजी व अर्जुन जिसमें से सुखजी लाओलाद फौत हो गया । अर्जुन के तीन लड़के हैं तथा छाज्या के भी तीन लड़के हैं जो अपीलांट हैं । लक्ष्मण के हम बीरबल, इन्दर तुल्ला और केशन्ता हैं । अर्जुन की विरासत छाज्या के नाम गलत दर्ज हुई है । विरासत को चैलेन्ज किया है । अर्जुन, चन्दू के जीवनकाल में ही फौत हो गया था । चन्दू जब फौत हो गया तो छाज्या के नाम विरासत दर्ज हुई जिसे रेस्पो० ने चैलेन्ज किया है । खाता सं० 9, 108, 244 में सालिम व 203 में 1/6 हिस्सा चन्दू की खातेदारी का है । खाता सं० 203 में तीनों परिवारों का 1/6 में से 1/3-1/3 हिस्सा दर्ज था । इसमें तीनों का आपसी बंटवारा भी हुआ और 1/3-1/3 भग माना है । इसी सैटलमेन्ट के दौरान आराजी ख० नं० 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485 व 2486 प्रतिवादी सं० 6 ल० 11 के नाम बयनामा करा दिया और आपसी सैटलमेन्ट से जो मेरे कब्जे में आया वो खाता सं० 108 के खसरा नम्बर किता 4 रकबा 1.13 है० और खाता सं० 109 किता 13 रकबा 4.01 है० में से 1.66 है० रेस्पो० वादी के कब्जे में आया तभी से मैं काबिज हूँ । मैंने पूरी आराजी में बंटवारे का दावा पेश किया है जिसमें अन्तरिम स्थगन मिला । दौराने अन्तरिम कुछ आराजी को ट्रान्सफर कर दिया उसकी कन्टेम्प चल रही है । अपीलांट ने दूसरी अपील में 4 नम्बरों का एक अलग दावा कर दिया । ये चारों नम्बरों पर से स्थगन हटाना चाहते हैं और आराजी को बेचना चाहते हैं तथा उन्होंने स्थगन में भी आराजी बेच दी है । वैसे सहमति का बंटवारा था, अपील चलने योग्य नहीं है । निर्णय के अनुसार कैम्प कोर्ट में सहमति से सुनवाई हुई है । सभी तथ्य दावे में तय होंगे तब तक यथास्थिति बनाये रखें । रेस्पो० भी तो पाबन्द है जिस आराजी पर मैं काबिज हूँ उसे पाबन्द कराना चाहते हैं । इसलिए तहत न्यायालय का आदेश सही है और अपीलांट की अपील खारिज योग्य है ।

हमने उभयपक्ष के अभिभाषकगण की बहस सुनी एवं पत्रावली का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया । तहत न्यायालय के आदेश का अवलोकन किया ।

अपीलांट का अपील में मुख्य कथन यह रहा है कि अपीलांट के द्वारा (उनके पति छीतर) ही हरभेजी के ख० नं० 1216, 1217, 1218, 1219 किता 4 रकबा 1.13 है० में विभाजन व स्थाई निषेधाज्ञा का वाद इस आधार पर पेश किया है कि प्रतिवादी/रेस्पो० विवादित आराजी को आगे रहन, बय, मुन्तकिल कर रहे हैं तथा बिना बंटवारा प्रतिवादीगण को काशत नहीं करने दे रहे हैं । अतः विभाजन किया जावें । काशत में दखलंदाजी नहीं करें, मौके से बेदखल नहीं करें और मुन्तकिल नहीं करें ।

आगे कहा कि तहत अदालत ने मेरे दावे में मुझे ही पाबन्द कर दिया कि राजस्व रेकार्ड व मौके की यथास्थिति बनाये रखें तथा इस निर्णय का आधार यह लिया है कि बीरबल के वारिसान हरभेजी वगैरा द्वारा छीतर के विरुद्ध एक वाद धारा 88, 89, 153 व

188 आर.टी.एक्ट का पेश किया हुआ था उसमें 212 के निर्णय दिनांक 10.06.2016 में विवादित आराजी ख० नं० 1216, 1217, 1218, 1219 को भी शामिल कर लिया जिन पर हरभेजी वगैरा का कोई अधिकार नहीं है, में 212 के निर्णय से राजस्व रेकार्ड व मौके की यथास्थिति बनाये रखने से पाबन्द कर दिया है ।

अपीलांट अभिभाषक का कथन है कि वह विवादित आराजी का सह खातेदार है । मेरी आराजी पहले से ही बैंक में रहन रखी हैं, मैं उसको लोन हेतु रिनुवल कराना चाहता हूँ । बयनामा नहीं कर रहा हूँ तो मुझे क्यों पाबन्द किया है और रहन रखने हेतु इस्तदुआ की ।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह तो साबित है कि वादी/अपीलांट विवादित आराजी का सह खातेदार है और स्वयं का विभाजन का वाद है । प्रतिवादी/रेस्पोंड आराजी को बेचान करना चा रहे थे । इसलिए उनको पाबन्द कराना चाहते हैं और तहत अदालत ने अपीलांट/वादी विवादित आराजी को बय नहीं कराना चाहते हैं तो उन्हें उक्त आराजी पर पूर्ववत् बैंक से लोक की सुविधा मिलनी ही चाहिए । इसलिए अपील अपीलांट आंशिक स्वीकार योग्य है ।

अतः अपील अपीलांट आंशिक स्वीकार की जाती है । अधीनस्थ न्यायालय सहायक कलक्टर, अलवर के निर्णय दि० 10.06.2016 निरस्त किया जाता है तथा अपीलांट को विवादित आराजी जो उनकी खातेदारी की आराजी है पर बैंक से ऋण लेने, रहन रखने की प्रार्थना स्वीकार की जाती है, शेष निर्णय विवादित आराजी के विभाजन तक बय नहीं करने बाबत तथा कब्जे के मौके की यथास्थिति बनाये रखने के आदेश यथावत रखे जाते हैं । खर्चा अपना-अपना वहन करें ।

निर्णय आज दिनांक 20.07.2018 को मेरे द्वारा लिखाया जाकर खुले न्यायालय में सुनाया गया ।


(कमल राम मीना)

राजस्व अपील प्राधिकारी,
अलवर